विश्व न्याय मंदिर

रिज़वान 2017

विश्व के बहाईयों के प्रति

परमप्रिय मित्रों,

देखो ’महानतम नाम’ का समुदाय किस तरह खड़ा होता है! नई ’योजना’ के आरंभ हुए एक वर्ष बीतने के साथ ही रिपोर्टों से प्रमाणित होने लगा है कि कितने बड़े पैमाने पर क्या प्रयास किए जा रहे हैं और क्या उपलब्धियां आरंभ हो चुकी हैं। 5,000 विकास कार्यक्रमों में और अधिक गहनता लाने का कार्य अभूतपूर्व स्तर पर प्रयास करने की मांग करता है। ’योजना’ के मूलभूत तत्वों पर अपनी सुदृढ़ पकड़ के साथ बड़ी संख्या में मित्रगण इसकी आवश्यकताओं को लेकर सक्रिय हो रहे हैं और अपने प्रत्युत्तर की गुणवत्ता में दृढ़ता और त्याग की भावना झलका रहे हैं। जैसी कि कल्पना की गई थी, लम्बे समय से निरंतर चलाए जा रहे कुछ गहन विकास कार्यक्रम ज्ञान और संसाधनों के भंडार बनते जा रहे हैं, वे आस-पास के क्षेत्रों को सहायता दे रहे हैं और अनुभव एवं अंतर्दृष्टि के तेजी से संवितरण को सहज बना रहे हैं। गहन गतिविधि के केन्द्र – यानी वे पड़ोस एवं गांव जहां समुदाय-निर्माण का कार्य सर्वाधिक संकेन्द्रित है – सामूहिक रूपांतरण की उर्वर भूमि साबित हो रहे हैं। सहायक मंडल सदस्यों की एक विस्तृत और ऊर्जस्वित सेना और उनके सहायकगण धर्मानुयायियों के प्रयासों को उत्प्रेरित करने में जुटे हुए हैं, उन्हें यह परिकल्पना प्राप्त करने में मदद दे रहे हैं कि विविध परिस्थितियों में और प्रत्येक समुदाय-समूह (क्लस्टर) की अपनी स्थितियों के अनुरूप विकास-प्रक्रिया को कैसे आगे बढ़ाया जाए। अपनी-अपनी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की सहायता से, क्षेत्रीय बहाई परिषदें यह सीख रही हैं कि एक ही समय में, व्यापक समुदाय-समूहों के अंतर्गत, ’योजना’ के आवेग किस तरह निर्मित किये जायें। दूसरी ओर, कुछ छोटे देशों में जहां परिषदें नहीं हैं, इसी कार्य की शुरुआत राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित नई संस्थाओं द्वारा की जा रही है। हालांकि, जैसा कि किसी भी जैविक प्रक्रिया से अपेक्षा की जा सकती है, कुछ जगहों में तेजी से विकास हो रहा है जबकि कुछ अन्य जगहों में अभी ऐसा होना बाकी है, परन्तु पूरी दुनिया में गहन विकास कार्यक्रमों की कुल संख्या अब बढ़ने लगी है। तदुपरांत, हमें यह देखकर खुशी हो रही है कि ’योजना’ की गतिविधियों की भागीदारी में इसके प्रथम चार चक्रों के दौरान उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

अतः, आने वाले वर्ष में क्या होने जा रहा है उसके लिए इससे अधिक आशाजनक संकेत भला और क्या हो सकते हैं। और यह कि ‘उनके’ प्रियजनों ने ‘उनके’ धर्म के दायरे के विस्तार के लिए पूरी सत्यतापूर्वक प्रयास किया है, हम ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ के द्विशताब्दी जन्मोत्सव पर उन्हें इससे अधिक उपयुक्त क्या समर्पित कर सकते हैं? इस तरह बहाई विश्व द्वारा मनाए जाने वाले दो द्विशतवार्षिक समारोहों में से प्रथम अत्यंत ही रोमांचक परिदृश्य वाला अवसर है। यदि सही ढंग से देखा जाए तो, हृदयों को बहाउल्लाह से जोड़ने की दृष्टि से यह वर्ष अकेले ही अब तक का सबसे बड़ा विश्वव्यापी अवसर प्रस्तुत करता है। आगामी महीनों में, सबको इस बहुमूल्य अवसर का ध्यान रखना चाहिए और दूसरों को बहाउल्लाह के जीवन और उनके महान उद्देश्य से परिचित कराने के लिए हर जगह विद्यमान संभावनाओं के प्रति सचेत रहना चाहिए। अब बहाई विश्व के समक्ष शिक्षण का जो अवसर मौजूद है और जिसका पूर्ण रूप से उपयोग किया जाना

बहाई विश्व केंद्र • पी.ओ. बॉक्स 155 • 3100101 हाइफा, इज़रायल
टेलि.: 972 (4) 835 8358 • फैक्स: 972 (4) 835 8280 • ईमेल: secretariat@bwc.org

चाहिए, उसके लिए हर तरह के व्यक्ति के साथ आरंभ किए जा सकने वाले वार्तालापों के बारे में रचनात्मक रूप से विचार किया जाना चाहिए। ऐसे सार्थक संवादों के क्रम में समझ का विकास होता है और हृदय खुलते हैं – कभी-कभी तुरन्त। इस सुयोग्य कार्य में हर किसी की भूमिका है, और इस कार्य में लगने से प्राप्त होने वाला जो आनन्द है उससे किसी को भी स्वयं को वंचित नहीं करना चाहिए। हम उस एकमेव 'प्रियतम' से याचना करते हैं कि यह सम्पूर्ण द्विशतवार्षिकी वर्ष इस पवित्रतम और मधुरतम आनन्द से भर जाए: 'ईश्वर के दिवस' के अरुणोदय के बारे में अन्य व्यक्ति से कहने का आनन्द!

निष्ठावानों के समुदाय द्वारा निभाए जाने वाले अनिवार्य दायित्व विश्व में व्याप्त भ्रांति, अविश्वास और अनिश्चितता के वातावरण में अब और अत्यावश्यक हो गए हैं। वास्तव में, मित्रों को चाहिए कि वे एक ऐसा प्रदीप जलाने के लिए हर अवसर का प्रयोग करें जो मार्ग को प्रकाशित कर सके और जिससे चिन्तातुर लोगों को आश्वासन, निराशजनों को आशा प्राप्त हो सके। हमें धर्म-संरक्षक द्वारा एक बहाई समुदाय को दिए गए परामर्श का स्मरण हो आता है, वह भी ऐसे शब्दों में जो मानों हमारे ही समय के लिए अभीष्ट हो: "अनिष्ट घटनाओं और आपदाओं के तनाव और दबाव के भार से आज जबकि वर्तमान युग के समाज का ताना-बाना चरमरा रहा है, आज जबकि एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से, एक वर्ग को दूसरे वर्ग से, एक प्रजाति को दूसरी प्रजाति से, एक सम्प्रदाय को दूसरे सम्प्रदाय से पृथक करने वाली दरारों को उभारने वाली फूट बढ़ती जा रही है, तो 'योजना' को क्रियान्वित करने वालों को चाहिए कि वे अपने आध्यात्मिक जीवन और प्रशासनिक कार्यकलापों में इससे भी बढ़कर एकमयता झलकाएं और अपने सामूहिक उद्यम में गहन प्रयास, आपसी सहयोग एवं सामंजस्यपूर्ण विकास का और अधिक उच्च स्तर प्रदर्शित करें।" प्रभुधर्म के कार्य के आध्यात्मिक महत्व और धर्मानुयायियों को जिस एकाग्र इरादे के साथ अपने पावन दायित्वों को निभाना चाहिए उस पर सदा बल देते हुए शोगी एफेन्दी ने यह भी आगाह किया कि हम राजनीतिक विवादों, उलझनों और तकरारों में कोई हिस्सेदारी न करें। एक अन्य अवसर पर उन्होंने आग्रह किया कि "वे हर तरह के संघवाद और पक्षपात, निरर्थक विवादों, तुच्छ संगणनाओं, मुखड़े को उत्तेजित और इस परिवर्तनशील संसार के ध्यानाकर्षित करने वाले क्षणिक भावावेशों के दायरों से ऊपर उठें।" ये सब उन अपरिहार्य झागों और फुहारों की तरह हैं जिन्हें इस अशान्त और विभक्त समाज को अपने थपेड़ों से हिला रही तरंगें एक के बाद एक बना रही हैं। इस तरह के भटकावों में व्यस्त रहने से हमारा बहुत कुछ दांव पर लग जाता है। जैसा कि बहाउल्लाह का हर अनुयायी अच्छी तरह जानता है, मानवजाति का अन्तिम कल्याण उसके विभेदों को पाटने और उसकी एकता को दृढ़तापूर्वक स्थापित करने पर निर्भर है। अपने समाज के जीवन में बहाई जो भी योगदान देते हैं उसका लक्ष्य है एकता को बढ़ावा देना; समुदाय-निर्माण सम्बंधी उनका हर प्रयास इसी उद्देश्य के लिए है। कलह से थक चुके लोगों के लिए, 'महानतम नाम' की छाया तले पनप रहे समुदाय इस बात का एक जोरदार उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि एकता से क्या प्राप्त हो सकता है।

'उसके' इतने सारे प्रियजनों को निहारते हुए, यह देखते हुए कि कैसे वे विविध तरीकों से अपना सर्वस्व निछावर कर रहे हैं ताकि मानवजाति की एकता की ध्वजा उन्नत हो सके, हम 'प्रभुओं के प्रभु' का गुणगान करते हैं। हे अत्यंत प्रिय मित्रों: अब जबकि एक अत्यंत शुभ वर्ष आरंभ हो रहा है, क्या हममें से प्रत्येक को यह विचार नहीं करना चाहिए कि वे कौन-से स्वर्गिक कार्य हैं जिन्हें करने में 'उसकी' कृपा हमें सहायता देगी?

--विश्व न्याय मन्दिर